आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025

Received: 19/04/2025; Accepted: 21/04/2025; Published: 28/08/2025

बाल विज्ञान साहित्य: भविष्य की नींव

विजेता पाल

शोधार्थी, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

दिल्ली- 110068

ई मेल-: vijetapal2000@gmail.com

मोबाइल नंबर 7011415956 -

विजेता पाल, बाल विज्ञान साहित्य: भविष्य की नींव आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(179 -185) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072607

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोध सार -बच्चे भविष्य के निर्माणकर्ता हैं। आने वाला समाज बच्चों के हाथों विकसित होगा। आज के बच्चों की जीवन दिशा निर्धारित करेगी कि आने वाला समाज कैसा होगा, तो संभव है हम अच्छा समाज बनाने की कोशिश करेंगे। बच्चों को दिशा बड़ों से मिलती है, हमें ये देखना है कि आज हम किस तरह की शिक्षा बच्चों को दे रहे हैं। बच्चों को निडर, साहसी, तार्किक बनाना है तो तार्किक सोच निर्मित करनी होगी और तार्किकता विज्ञान से आती है। अतः स्पष्ट है कि बच्चों को विज्ञान की जानकारी होना आवश्यक है जो भविष्य की महती ज़रूरतों में से एक है।

बीज शब्द: -बाल साहित्य, बाल विज्ञान साहित्य, कल्पना, तार्किकता, टेक्नोलॉजी, रडार, परखनली शिशु, पर्यावरण, मानव संरचना, प्रदूषण।

मूल आलेख:- वह साहित्य जिसे पढ़कर बच्चे की जिज्ञासाऐं, इच्छाएँ, मनोरंजन, रुचि इत्यादि के समन्वय के साथसाथ उनका सम्यक- विकास, आत्म सुधार और जीवन संघर्षों से जूझने हेतु तैयार कर सके 'बाल साहित्य' कहा जाता है। शकुंतला वर्मा जी के अनुसार बाल साहित्य वह साहित्य है", जो बच्चों के मानसिक

स्तर को दृष्टि में रखकर, उनके धरातल तक उतरकर, उनके मनोभावों तथा रूचियों को ध्यान में रखकर, मनोरंजक शैली में ज्ञानवर्धक रूप से लिखा गया हो।[1]"

जहाँ एक ओर 'साहित्य' लोक कल्याण और संवेदनाओं को उजागर करता है वहीं दूसरी ओर 'विज्ञान' तार्किक दृष्टि और प्रमाणिकता के साथ चीजों को उजागर करता है। साहित्य के साथ विज्ञान को जोड़ना पहली नज़र में साहित्य प्रेमियों को थोड़ा अचंभित कर सकता है कि साहित्य जैसे संवेदनशील विषय में प्रयोगशील विज्ञान जैसे विषय का समावेश किस प्रकार औचित्यपूर्ण है परन्तु आधुनिक बाल विज्ञान कथाकारो ने इसे संभव कर दिखाया है।

बाल साहित्य में विज्ञान आज के अत्यधिक उपयोगी विषयों मे से एक है। भारतीय बाल साहित्य की नींव मे जिस प्रकार प्रारंभ से अंधविश्वास, जादू, परिकथा और अतार्किक विषय सम्मिलित रहे उनसे बच्चों का विकास नहीं हुआ अपितु वह हानिकारक ही साबित हुआ। बच्चों को कच्ची उम्र मे जिस तरह का साहित्य प्रदान किया जाएगा, वह उसी के अनुरूप स्वयं को निर्मित करते हैं और फिर बच्चों को यह समझ कतई नहीं होती कि उन्हें किस प्रकार का साहित्य पढ़ना चाहिए और किस प्रकार का नहीं, यह सभी हम बड़े लोगों को ही सोचना होगा कि हमें बच्चों को किस दिशा में अग्रसर करना है। बाल साहित्य के महत्त्व के बारे मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने कहा था कि "बच्चों के लिए केवल पाठ्य पुस्तकें ही पर्याप्त नहीं है। बाल साहित्य में कुछ तो ऐसा हो, जिसे बच्चे समझ सकें एवं कुछ ऐसा भी हो जिसे वह ना समझ सकें, इससे उनका बाल हृदय कुछ सोचने के लिए विवश हो जायेगा। यह उनकी कल्पना शक्ति और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।"[2]

बाल विज्ञान साहित्य का अर्थ:-

"वस्तुत वैज्ञानिक खास दृष्टिबोध, विशिष्ट अध्ययन पद्धति है। वह व्यक्ति की प्रश्न आकुलता का समाधान करती और उसे निरंतर जिज्ञासु बनाए रखती है। आसपास घट रही घटनाओं के मूल में जो कारण हैं उनका क्रमबद्ध, विश्लेषणात्मक एवं तर्कसंगत बोध, जिसे प्रयोग की कसौटी पर जाँचा परखा जा सके- विज्ञान है।"[3]

बाल विज्ञान साहित्य के अंतर्गत विज्ञान की घटनाओं और सिद्धांतों को मनोरंजन और रुचि पूर्ण तरीके से कथा शैली में प्रस्तुत किया जाता है जो बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ विज्ञान की महत्वपूर्ण जानकारी एक रुचिपूर्ण तरीके से उपलब्ध कराती है। मुख्यत: विज्ञान एक जटिल विषय है जिसे आसानी से नहीं समझा जा सकता परंतु साहित्य के मनोरंजन पूर्ण तरीके, कल्पना और कथा शैली के माध्यम से विज्ञान को कथाकार बहुत सरल तरीके से प्रस्तुत करते हैं जिससे पाठक को उसे ग्रहण करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती।

बाल विज्ञान साहित्य में कल्पना अनिवार्य रूप से सहायक तत्व है क्योंकि बाल मन में कल्पनाओं का अपार संसार समाहित होता है जिसके माध्यम से उनके मन में जिज्ञासाएँ तथा इच्छाऐं उत्पन्न होती हैं। कल्पनाओं

के माध्यम से ही व्यक्ति अपने सपनों को वास्तविक रूप प्रदान करता है। कहा भी जाता है कि सपने पहले कल्पना में देखे जाते है फिर वास्तविकता में। इसी की लेकर राल्फ वाल्डो इमर्सन का कथन है कि "विज्ञान नहीं जानता कि वह कल्पना का कितना कर्ज़मंद है।"[4]

1884 मानी जाती है जो 'आश्चर्य वृत्तांत' हिंदी में बाल विज्ञान लेखन की शुरुआत अम्बिका दत्त व्यास की" 1 -सरस्वती के भाग 'चंद्रलोक की यात्रा' के बीच प्रकाशित हुई। इसके बाद केशव प्रसाद सिंह की 1888 से, संख्या हिंदी की प्रथम मौलिक विज्ञान कथा का श्रेय सत्यदेव परिव्राजक " [5]में प्रकाशित हुई। 1900 सन् 6 को प्राप्त है 'आश्चर्यजनक घंटी' की विज्ञान कथा।[6]" इस दौर में अधिकतर आविष्कारों और वैज्ञानिक जीवन चरित्र लिखने वाले रचनाकार शामिल थे जैसे नवल बिहारी मिश्र, डॉ सत्य प्रकाश, श्री नाथ सिंह, रामदास गौड़, श्याम नारायण कपूर इत्यादि। इस युग का रचनाकाल प्रकाश मनु के अनुसार तक माना जाता 1947 तक मानी गई 1980 -1947 है। दूसरे युग की शुरुआत, इसे की संज्ञा दी गई है। इस दौर में बाल 'गौरव युग' विज्ञान लेखको ने तेज़ी पकड़ी तथा दिलचस्प और अनूठी कृतियाँ कल्पना के रंगमें भरकर बच्चों को प्रस्तुत की। इस दौर में भगवती प्रसाद श्रीवास्तव, रमेश प्रभाकर, केशवसागर मिश्र, राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, हरीश अग्रवाल, व्यथित हृदय, जयप्रकाश भारती, हरिकृष्ण देवसरे, सुखदेव दुबे इत्यादि शामिल हैं। इस युग की विशेषता यह है कि विज्ञान के नियमों को सत्यता की कसौटी पर कसकर उचित कल्पना का समावेश कर सरल सुबोध भाषा में लिखा गया। तीसरा युग 1981 के नाम से जाना जाता है जिसका समय 'विकास युग' से आज तक है। इस युग के रचनाकारो में हरीश अग्रवाल, रमेशदत्त शर्मा, देवेंद्र मेवाड़ी, राजेश जैन, प्रकाश मनु, राजीव गर्ग, शुकदेव प्रसाद, बृजमोहन गुप्त, विश्वामित्र शर्मा इत्यादि शामिल है। इस युग में बदलती हुई परिस्थितियों के साथ विविधता और विस्तार आया। इस युग की रचनाओं में टेक्नोलॉजी और विज्ञान के प्रत्येक सिद्धांतों के पीछे तार्किक सोच, अनुसंधान ओर नियमों को मद्दे नज़र रखते हुए रचनाएँ लिखी गई। इस युग में टेक्नोलॉजी के लाभ और हानि पर भी विचार किया गया तथा विज्ञान के महत्व को बताते हुए कहा गया कि [7]"विज्ञान मनुष्यता की अनेक समस्याओं का निदान करने में सक्षम है।"

यह पूर्णतः स्पष्ट है कि भविष्य में टेक्नोलॉजी के ज़रिए विज्ञान का महत्त्व बढ़ने वाला है। अब केवल साधारण बाल साहित्य तक बच्चों की पहुँच से कार्य नहीं चल सकता लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि साधारण बाल साहित्य का महत्व नहीं है अपितु इसके साथसाथ बाल विज्ञान साहित्य को भी महत्त्व दिया जाए। बाल - साहित्यकार का" विज्ञानकाम वैज्ञानिक तथ्यों का सामान्यीकरण कर उनके और बालमन के बीच तालमेल बैठाना है। वह बालक को अपने आसपास की घटनाओं से जोड़ने की ज़िम्मेदारी निभाता है ताकि उसकी जिज्ञासा बलवती हो। उसमें कुछ सीखने की ललक पैदा हो। [8]"बाल विज्ञान साहित्य ने विभिन्न विषयों की आवश्यक जानकारी को आसान बनाकर बच्चों को दिया है जिसे वह खेल-खेल में सीख सकते है जो बच्चो के मस्तिष्क पर बोझ की अपेक्षा बहुत ही सहज तरह से अंकित होती है।

बाल विज्ञान साहित्य ने बच्चों के जीवन जीने, उनकी सोच को विकसित करने, और भविष्य की कई समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। पशु पक्षियों से जुड़ी आवश्यक जानकारी बाल साहित्य में भरपूर

है जिसमें सुरेश सिंह की 'हमारी चिड़ियाँ', 'पक्षियों की दुनिया', 'जानवरों का जगत', 'समुद्र के जीव', पारसनाथ जी की 'पक्षी परिचय', नवलबिहारी मिश्र की 'इधर उधर मिलने वाले जंतु', 'मक्खियों की करतूत', राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह की ' रमेश प्रभाकर की 'हमारे वन्य पशु'कीड़ों की विचित्र दुनिया ' यों की दुनिया में सुरेशसिंह जी पक्षि" इत्यादि रचनाएं शामिल है। 'साँपों का संसार' और शुकदेव दुबे द्वारा साथ उन पक्षियों और उनकी आद -हमारे परिचित पक्षियों के साथतों तथा स्वभाव के बारे में भी बताते हैं जिनके बारे में बहुत कम जानकारी है।हमारे वन्य पशु एक ऐसी पुस्तक है जिसमें सिंह" [9], हिरण आदि वन्य पशुओं की दुनिया में उतरकर उनके रहनसहन -, स्वभाव आदि से बच्चों को बड़ी अंतरंगता से परिचित कराया जाता है।रमेश प्रभाकर द् ;वारा पढ़कर पता चलता है कि कीड़े तुच्छ नहीं 'कीड़ों की विचित्र दुनिया' है और उनकी दुनिया हमारी दुनिया से कहीं अधिक चुस्त और कहीं अधिक बहुरंगी है जो अपने आप में [10]से भेद और रहस्य छुपाये हुए है। जीवन के बहुत

विज्ञान के बारे में जितना बड़ों को बताना ज़रूरी है उतना ही यह भी ज़रूरी है कि बाल पाठकों को विज्ञान के महत्त्व और उनके अद्‌भुत आविष्कारों के बारे में बताया जाए जिन्होंने हमारे जीवन को बदल दिया। बाल मन में बाहरी दुनिया को जानने की ललक होती है अंतरिक्ष, ब्रह्मांड, उड़नतश्तरी इत्यादि की जानकारी बच्चे बहुत जिज्ञासु मन से प्राप्त करते है। इस प्रकार की रचनाओं ने वैज्ञानिक नियमों, उपनियमों, उपकरण तथा सिद्धांतों के साथबाऊ रूप ना ले। साथ काल्पनिकता का भी समावेश होता है जिसे प्रस्तुत की जानकारी उ - इस प्रकार की रचनाओं में शामिल है:-गोरख प्रसाद द्वारा 'आकाश की सैर', कृष्णानंद गुप्त रचित आकाश ' 'दर्शन, जगदानंद राय द्वारा 'ग्रह नक्षत्र', रमेश वर्मा की ' झिलमिलाते सितारे', 'बाह्य अंतरिक्ष के उपग्रह', 'उड़न तश्तरी' और देवेन्द्र मेवाड़ी जी द्वारा 'सूरज के आँगन में', 'अनोखा सौरमंडल 'इत्यादि शामिल है।भी बड़े मज़ेदार ढंग से लिखी गई 'आकाश की सैर' गोरख प्रसाद की", जो सचमुच उन्हेंसाथ ले (बच्चों) विज्ञान साहित्य जाकर आकाश के गूढ़ और मनोरम रहस्यों से परिचित कराती है। उस दौर में बच्चों के लिए लिखना कितना ज़रूरी और महत्वपूर्ण समझा गया है।[11]" हालांकि विज्ञान साहित्य का महत्त्व आज भी बरकरार है आज तरह तरह की खोजें जैसे मंगल ग्रह अभियान, शुक्र ग्रह इत्यादि पर खोज तथा जीवन की नई संभावनाओं के लिए शोध किए जा रहे है। रमेश वर्मा जी की तारों के बारे में 'झिलमिलाते सितारे' अनोखी जानकारी देने वाली पुस्तक है जिनमें तारों का टिमटिमाना, तारें किस प्रकार बनते हैं आदि जैसी जानकारी बाल पाठकों के मन को बाँधलेने वालों पर जादुई असर डालती है। प्रकाश मनु के अनुसार एक " है कि अच्छा ऐसी पुस्तक है जिसे पढ़कर गर्व होता, हिंदी में भी अब ज्ञान विज्ञान को लेकर इतनी ज़िंदा भाषा में इतनी खूबसूरती से लिखी गई किताबें पढ़ने को मिलती है। रमेश वर्मा की भाषा में ऐसा आकर्षण है कि झिलमिलाते सितारों पर लिखी गई यह पुस्तक किसी परी लोक की सैर जैसी लगती है। बाल पाठक ही नहीं, बड़े भी इस पुस्तक को हाथ में लेंगे तो पूरा पढ़े बगैर छोड़ नहीं पाएंगे।[12]" देवेंद्र मेवाड़ी जी की सूरज ' दोनों अंतरिक्ष को लेकर लिखी गई पुस्तकें हैं इनमें देवेन्द्र मेवाड़ी जी ने 'अनोखा सौरमंडल' और 'के आँगन में गर किया है।खेल में उजा-आंतरिक्ष के रहस्यों को बच्चों के आगे खेल

स्वच्छ पर्यावरण आज की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है। देश में आज वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गया है। इस ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना ज़रूरी है। इस प्रकार की दीर्घकालिक समस्याओं के लिए केवल कुछ महीने के प्रयास से सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, हमें नए दृष्टिकोण और समस्या के निर्माण के लिए मानसिकता को बदलना होगा जो शिक्षा से ही अर्जित की जा सकती है। बाल साहित्यकारों में जयप्रकाश भारती द्वारा 'पर्यावरण और हम' शुकदेव प्रसाद रचित 'पेड़ लगाओ सुखी रहो', देवेंद्र मेवाड़ी द्वारा 'वायु प्रदूषण' तथा 'जल प्रदूषण' शिव गोपाल मिश्र की 'कैसा है हमारा वायुमंडल' दिल्ल'ी मेरी दिल्लीमें देवेन्द्र मेवाड़ी जी ने दिल्ली के पुराने 'दिल्ली मेरी दिल्ली' इत्यादि रचनाएँ है। ' स्वच्छ वातावरण से आज के वायु प्रदूषण, पेड़ों की घटती संख्या, कारखानों का धुआँ इत्यादि जैसे विषयों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

मानव संरचना की सहायता से शरीर के अंगों के कार्य तथा कार्यों की प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है। बाल विज्ञान साहित्य मे इस पर अच्छा खासा ध्यान दिया गया है। इस प्रकार की रचनाओं मे वीरकुमार अधीर की 'ष्क का रहस्यमस्ति', 'सपने कहाँ से आते है', संतराम वत्स्य द्वारा 'हमारा शरीर', मन्मथनाथ गुप्त रचित इत्यादि 'भारतीय परखनली शिशु की कहानी' और सुनीलदत्त तिवारी जी की 'आदमी का जन्म' में मस्तिष्क काम कैसे करता है 'मस्तिष्क के रहस्यमय' शामिल है।, उसकी बनावट कैसी है, शरीर के बाकी अंगों के साथ वह कैसे जुड़ा है, स्वस्थ्य मस्तिष्क और स्वस्थ शरीर के ज़रिए आयु कैसे लंबी हो सकती है और मनुष्य की इच्छा शक्ति और कल्पनाएँ कैसे जन्म लेती है इत्यादि शामिल हैं। में 'सपने कहाँ से आते हैं' की क्रियाएं तथा चेतन जगत में जब प्रकट नहीं हो दिखाया गया है कि किस प्रकार हमारे अवचेतन मन पाती है तो वह स्वप्न के माध्यम से दिखाई देती है इस रचना में अवचेतन और चेतन मन के बीच मनुष्य की इच्छाओं का व्यापार किस प्रकार चलता है दिखाया गया है और सपनों के पीछे क्या कारण है, को बताया गया है। प्रक्रिया के माध्यम से शिशु पैदा 'विट्रो फर्टिलाइजेशन' में 'शिशु की कहानी भारतीय परखनली' कियाजाता है। यह आधुनिक प्रचलित शिशु जन्म प्रणाली है जिसमें महिला के अंडे और पुरुष के शुक्राणु को शरीर से बाहर प्रयोगशाला में मिलाया जाता है और जब अंडा निषेचित हो जाता है तो महिला के गर्भाशय में धारण कर दिया जाता है।

आज के युग में मनुष्य के प्रत्येक काम तकनीकी की सहायता से पूर्ण होते है। तकनीक के द्वारा मनुष्य ने केवल पृथ्वी तक सीमित न होकर अंतरिक्ष तक उड़ान भरी है। समुद्र की ऊपरी सतह से लेकर गहराइयों तक पहुँचाया है। तकनीकी की कठिन कहानियों को बाल साहित्यकारों ने बहुत सरल रूप से बच्चों तक पहुँचाया है जिसमें प्रमोदशंकर भट्ट द्वारा 'पनडुब्बी', अवतार सिंह की विज्ञान की आँख': रडार', प्रवीणकुमार गुप्त रचित 'परमाणु शक्ति', 'कंप्यूटर', वेद मित्र की 'दूरबीन की कहानी', श्रीकृष्ण द्वारा रे पट चट एक्स' में 'दूरबीन की कहानी' शामिल है। 'टेलीविजन' और दुर्गाप्रसाद शुक्ल 'ऑपरेशन बताया गया है कि इसका " आविष्कार एक संयोग का नतीजा है चश्मा बनानेवाले हैंस लिपरशी ने दो लैंसो को बनाकर सामने की भी लगा कि मीनार अब दूर मीनार को देखा तो वो उन्हें अधिक साफ और चमकीले नज़र आईं। उन्हें यह नहीं, बल्कि पास खिसक आई है।[13]" विज्ञान की आँख: रडार में बताया गया है कि किस तरह रेडियो तरंगो

का उपयोग करके वस्तु की गति, दूरी तथा दिशा का मापन किया जाता है। इसी तरह बहुत सी ऐसे रचनाएँ लिखी गई है जो तकनीक का उपयोग करके मानव कार्यों में सहायक है।

कृषि मानव जीवन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक है क्योंकि जीवन के लिए भोजन की आवश्यकता है। मनुष्य अपने आहार के लिए कृषि पर निर्भर है। आज जिस तरह मिट्टी की उर्वरता की कमी, पानी की कमी, पौधों का सूखना और मिट्टी में रेतीलापन बढ़ना जैसी समस्याएँ हमारे सम्मुख है उनके लिए निपटान ज़रूरी है। इस ओर एक कदम बाल साहित्यकारों ने भी बढ़ाया है। वेद मिश्र द्वारा 'कोई खेत न सूखे', संतराम वत्स्य की 'पौधे की कहानी', विनोद प्रभाकर 'माटी हो गई सोना' और देवेंद्र मेवाड़ी द्वारा 'फसलें कहे कहानी' साथ उसके वैज्ञानिक अध्ययन और -मिट्टी की किस्मों के साथ" में 'माटी हो गई सोना' इत्यादि लिखी गई है। उसमें छिपे धातु भंडार कच्चे तेल और तरहतरह की अमूल्य संपदा को खोदकर हासिल करने की तकनीक -, प्रणाली के बारे में बहुत विस्तार से बताया गया। [14]"फसलें कहे कहानी पुस्तक में गेहूँ इस", धान, मक्का, आलू, सोयाबीन, गन्ना, चकुंदर, कपास, तंबाकू, चाय, कॉफी, कोको, मूँगफली, मशरूम जैसी फसलों की कहानी है। ये फसलें खुद अपनी कहानी कहती है कि हजारों वर्ष पहले कहाँ उनकी खेती होती थी, कैसेकैसे बीहड़ - वहाँ से कैसे उनकी विश्व यात्रा शुरू हुई और कैसे एक जगह होने वाली जंगलों आदि मे उन्हें खोजा गया और फसल देखते ही देखते दुनिया के सारे देशों में जा पहुँची। [15]"इसी प्रकार 'पृथ्वी का बचपन' 'पृथ्वी का जन्म', 'धरती कैसे बनी','थ्वी को समझने इत्यादि रचनाएँ भूविज्ञान से संबंधित है जो पृ 'धरती का कांपती क्यों है' में सहायता करती है।

बाल विज्ञान साहित्यकारों ने ऐसी कई आवश्यक जानकारी प्रदान की है जिसे आजतक अंधविश्वास और जानकारी के अभाव के कारण अच्छा नहीं माना जाता था। विज्ञान आज हमारे छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कार्यों में शामिल है। आज बिना टेक्नोलॉजी के हम अपंग है। आज समस्या को जानने से लेकर उसका समाधान वैज्ञानिक पद्धति से किया जाता है। बच्चों को विज्ञान साहित्य से दोहरा लाभ है जिसमें विज्ञान को आसानी से समझने और मनोरंजन दोनों शामिल है। विद्यालयों में जिन सिद्धांतों को डाँट फटकारकर बच्चों को याद कराया जाता है उसे साहित्य सुगमता से करता है। विज्ञान बच्चों को भविष्य में तार्किक सोच और अंधविश्वासी न बनने में सहायता करता है, उसके किसी बात को न मानने के पीछे सदियों की परम्परा की जरूरत नहीं बल्कि एक तर्क ही काफी है जो सत्यता पर आधारित है।

संदर्भ ग्रन्थ: -

1) निकेश कुमार, बाल साहित्य स्वरुप एवं विकास, बीएफसी पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ, 2021, पृष्ठ संख्या- 29
2) वही, पृष्ठ 27
3) ओमप्रकाश कश्यप, बचपन और बालसाहित्य के सरोकार, सेतु प्रकाशन, नोएडा, 2024, पृष्ठ 415

4) वही, पृष्ठ 414

5) वही, पृष्ठ 424

6) वही, पृष्ठ 425

7) वही, पृष्ठ 433

8) वही, पृष्ठ 430

9) प्रकाश मनु, हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृष्ठ 405

10) वही, पृष्ठ 407

11) वही, पृष्ठ 404

12) वही, पृष्ठ 408

13) वही, पृष्ठ 414

14) वही, पृष्ठ 417

15) वही, पृष्ठ 421

****